2 v/;;u i)fr

आधुनिक भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता परिवर्तन है। परम्परागत भारतीय ग्रामीण संरचना का प्रत्येक पक्ष परिवर्तित हो रहा है। परिवर्तन की शक्तियां अनेक हैं। औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का प्रसार नियोजित सामाजिक परिवर्तन आधुनिकीकरण की प्रक्रिया आदि परिवर्तन के नवीन कारक और परिस्थितियां हैं। परिवर्तन की इन नवीन शक्तियों ने न केवल नगरीय समुदाय की विशेषताओं को प्रभावित किया है तथा परिवर्तित किया है बल्कि तुलनात्मक रूप से स्थिर समझे जाने वाले ग्रामीण समुदाय पर भी इसका प्रभाव पड़ा है। आधुनिक भारत में ग्रामीण समुदाय परिवर्तन की नवीन शक्तियों के कारण अत्याधिक गतिशील होता जा रहा है। कृषि और भूमि पर आधारित ग्रामीण समुदाय की सामाजिक और आर्थिक संरचना की परम्परागत स्थिर प्रवृत्ति, नवीन परिवेश में बहुत ही तीव्रगति से परिवर्तित हुई है। ग्रामीण समुदाय न केवल परिवर्तन की वाह्य शक्तियों के द्वारा प्रभावित हो रहा है बल्कि परिवर्तन की व्यापक प्रवृत्तियां ग्रामीण समुदाय के संरचनात्मक और संस्थागत जीवन तथा सामाजिक, आर्थिक, व्यवसायिक सम्बन्धों के क्षेत्र में देखने को मिल रहा है। ग्रामीण समुदाय में परिवर्तन के नवीन प्रतिमान का अध्ययन सामाजिक मानवशास्त्र और समाज विज्ञान की गवेषणा का केन्द्र बिन्दु बन गया है। ग्रामीण समुदाय के अध्ययन के द्वारा न केवल ग्रामीण समुदाय की संरचनात्मक और प्रकार्यात्मक विशेषताओं में होने वाले परिवर्तन पर प्रकाश पड़ता है बल्कि परिवर्तन की व्यापक प्रवृत्तियां भी स्पष्ट होती हैं। समकालीन भारतीय ग्रामीण समुदाय सामाजिक संरचना में परिवर्तन के लिए परिवर्तन की दिशा की ओर उन्मुख हुआ है। परिवर्तन के निम्न नवीन तथ्यों ने ग्रामीण समुदाय को प्रभावित किया है। उनमें से यातायात और संचार के नवीन साधनों का प्रचार शिक्षा का विस्तार, ग्रामीण पुनर्निर्माण कार्यक्रम, सहकारिता आन्दोलन सामुदायिक विकास योजना, सूचना प्रौद्योगिकी आदि प्रमुख हैं।

v/;;u dk mnn'; ,o {k=

वर्तमान अध्ययन की प्रकृति अन्वेषणात्मक तथा विवरणात्मक है, इसके द्वारा अध्ययन के लिए चुने गये गाँवों के निम्नलिखित पक्षों की संरचनात्मक विशेषताओं की प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है।

1. *ifjfLFkrdh; vkj Hkkfrd ljpuk ¼lkekftd ljpuk½* %& अध्ययन का प्रथम उद्देश्य विश्लेषण के लिए चुने गये ग्राम सभाओं की परिस्थितकीय और भौतिक विशेषताओं का चित्र प्रस्तुत किया गया है। ग्राम सभाओं की भौगोलिक स्थिति भूमि और जलवायु की विशेषताएं सार्वजनिक सुविधाएं मकानों की संरचना आदि विश्लेषण के द्वारा यह ज्ञात करने का प्रयत्न किया गया है कि किस प्रकार ग्राम सभाओं की परिस्थितिकीय विशेषताएं ग्रामीण

आर्थिक संरचना के विकास मे योगदान देती हैं तथा विशेषताओं में ग्राम सभाओं को वाह्य संसार विशेषकर निकटवर्ती नगर से सम्पर्क करने में योगदान दिया है। समाजशास्त्रीय अध्ययन के एक महत्वपूर्ण आवश्यक अध्ययन से सम्बन्धित उत्तरदाताओं की सामाजिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करना है। अध्ययन क्षेत्र के मुख्य पक्ष निम्नलिखित हैं –

a. ग्रामीण समुदाय के लोगो की समाजिक संरचना, पारिवारिक संरचना आर्थिक संरचना, किस प्रकार की हैं पता लगाना।

b. ग्रामीण समुदाय के लोगों की आयु, जाति, व्यवसाय, वैवाहिक स्थिति, शैक्षणिक स्थिति, आवासीय स्थिति, भूमि स्वमित्व, सूचना संचार संप्रेषण, साधनों, धार्मिक जीवन वृहद एव लघु परम्पराओं की अन्तःक्रिया सम्बन्धित तथ्यों का पता लगाना।

c. ग्रामीण समुदाय के लोगों में राजनीतिक सहभागिता, मूल्यों में परिवर्तन मनोरंजन के बदलते स्वरूपों का पता लगना।

ikfjokfjd lajpuk vkj ookfgd fLFkfr

ग्रामीण समुदाय की आधारभूत संस्थाएं परिवार और विवाह हैं, कृषि पर आधाारित आर्थिक संरचना की निरन्तरता तथा हिन्दू जीवन दर्शन के आधारभूत लक्ष्यों की पूर्ति के लिए संयुक्त परिवार और हिन्दू विवाह ग्रामीण समुदाय की मौलिक और आवश्यक संस्थाएं रही हैं। वर्तमान अध्ययन यह ज्ञात करने का प्रयत्न करता है कि –

क. ग्रामीण समुदाय के लोगों के परिवार के स्वरूपों, नातेदारी सम्बन्धों नातेदारी पर आधारित परिवार का स्वरूप, परिवार मे पीढ़ियों की संख्या इत्यादि का पता लगाना।

ख. उनकी पारिवारिक निर्णय और सत्ता का महत्व सम्बन्धी तथ्यों का पता लगाना।

ग. उनकी परिवारात्मक और सम्बन्धों की पारस्परिकता का पता लगाना।

घ. उनकी पारिवारिक जीवन और मूल्यांकन अभिवृत्ति का पता लगाना।

xkeh.k vkfFkd lajpuk

कृषि पर आधारित परम्परागत ग्रामीण आर्थिक संरचना नियोजित परिवर्तन के कार्यक्रमों, नगरीकरण और औद्योगीकरण के सामान्य प्रभावों, यातायात और संचार के साधनों का विकास, शिक्षा का व्यापक प्रसार आदि कारणों के परिणाम स्वरूप परिवर्तित होती जा रही है वर्तमान अध्ययन यह ज्ञात करने का प्रयत्न करता है कि –

क. ग्रामीण समुदाय के लोगों की व्यवसायिक संरचना और उपभोग के प्रतिमानों का स्वरूप क्या है।

ख. उनकी भूमि सम्बन्धों और जजमानी व्यवस्था सम्बन्धी तथ्यों का स्वरूप क्या है।

ग. परम्परागत व्यवसायिक गतिशीलता और आर्थिक गतिशीलता के प्रति उन्मुखता का स्वरूप क्या है।

घ. उनकी आर्थिक समस्यायें एवं नगरीय स्थानान्तरण सम्बन्धी दशाओं का स्वरूप क्या है।

ड़. नवीन आधुनिक व्यवसायों की ओर ग्रामीण समुदाय के लोगों की उन्मुखता का पता लगाना।

ड़. ग्रामीण समुदाय के लोगों के परम्परागत कृषि व्यवसाय में नगदी व कम समय की फसलों के उत्पादन की ओर उन्मुखता का पता लगाना।

df"k ,o Hkfe LokfeRo

भूमि स्वामित्व व्यक्ति को अनेक प्रकार के अधिकार तथा सुविधाएं प्राप्त कराने में योगदान देता है। अध्ययन के क्षेत्र में कृषि एवं भूमि स्वामित्व से सम्बन्धित निम्नलिखित भाग हैं –

क. ग्रामीण समुदाय के लोगों की भूमि स्वामित्व प्रतिमान का पता लगाना।

ख. उनकी भूमि के क्रय विक्रय सम्बन्धी तथ्यों का पता लगाना।

ग. उनकी कृषि के आधुनिकीकरण का पता लगाना।

घ. नवीन वैज्ञानिक तकनीकी व मशीनीकरण के द्वारा कृषि के बदले तरीकों का ग्रामीण समुदाय के लोगों के जीवन पर प्रभाव का पता लगाना।

jktuhfrd lgHkkfxrk ,o lpuk lEi"k.k

विकासवादी युग में व्यक्ति के सामाजिक, सांस्कृतिक वैज्ञानिक एवं राजनैतिक जीवन को गतिशील बनाने तथा उन्हें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विचाराधाराओं से जोड़ने में सूचना संचार एवं सम्प्रेषण के साधनों का महत्वपूर्ण स्थान है। इससे सम्बन्धित अध्ययन के क्षेत्र में निम्नलिखित पक्ष हैं।

¼v½- ग्रामीण समुदाय के लोगों की सूचना संचार एवं सम्प्रेषण साधनों से सम्पर्क का पता लगाना।

¼c½- ग्रामीण समुदाय के लोगों का नगरीय सम्पर्क एवं अन्तःक्रियाओं का पता लगाना।

¼l½- ग्रामीण समुदाय के लोगों पर सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभाव का पता लगाना।

¼n½- ग्रामीण समुदाय के लोगों पर कम्प्यूटरीकरण के प्रभाव का पता लगाना।

lkLdfrd eY; ,o /kkfeld fØ;k,

धर्म का संश्लेषण व्यक्तिगत और सामुदायिक स्तर पर ग्रामीण जीवन के प्रत्येक पक्ष से अत्यन्त घनिष्ठ रहा है। वर्तमान अध्ययन ग्रामीण जीवन में धर्म की महत्ता का विश्लेषण दो स्तरों पर करता है।

a. ग्रामीण समुदायो में यह देखने का प्रयत्न किया गया है कि किस प्रकार वृहद हिन्दू परम्पराएं ग्रामीण स्थानीय लघु परम्पराओं के साथ अन्तःक्रिया करती हैं।

b. ग्रामीण समुदायों में किस प्रकार धार्मिक विश्वास और कर्मकाण्ड ग्रामीण सुदृढ़ता एवं सामंजस्य वृद्धि के साथ–साथ विभिन्न जाति समूहों को संस्कारगत सम्बन्धों की एक सूत्रता में आबद्ध करते हैं। इन तथ्यों के अतिरिक्त यह ज्ञात करने का प्रयत्न किया गया है कि शिक्षा के प्रसार नगरीय सम्पर्क आर्थिक और व्यवसायिक परिवर्तन प्रक्रियाओं के परिणाम स्वरूप ग्रामीण जीवन मे रूढ़िवादिता और संकीर्णता के प्रतिमान किस मात्रा में शिथिल पड़ते जा रहे हैं तथा धर्म निरपेक्षीकरण के मूल्यों का विस्तार किस मात्रा में ग्रामीण समुदाय में हो रहा है।

midYiuk ,o 'kk/k i'u

प्रस्तुत पी–एच.डी. शोध प्रारूप में शोधार्थी द्वारा पूरे शोध से सम्बन्धित जिस प्रकार के प्रश्नों की आवश्यकता है। शोधार्थी द्वारा उन प्रश्नों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत उपकल्पना में निम्न प्रश्न रखे गये हैं। जो निम्न प्रकार हैं –

1. ग्रामीण परिवेश में रहने वाले लोगों की सामाजिक संरचना किस प्रकार की है।
2. ग्रामीण लोगों की पारिवारिक संरचना किस प्रकार की है यह आधुनिकीकरण के प्रभाव से कैसे परिवर्तित हो रही है।
3. ग्रामीण समुदाय में रहने वाले लोगो की आर्थिक संरचना किस प्रकार की है।
4. ग्रामीण लोगों की भूमिस्वामित्व तथा उनकी कृषि के आधुनिकीकरण सम्बन्धी स्थिति कैसी है।
5. ग्रामीण समाज के लोगों की राजनैतिक सहभागिता एवं सूचना संप्रेषण साधनों से सम्पर्क एवं उनकी नगरीय सम्पर्कता तथा अन्तःक्रियाएं किस प्रकार की हैं।
6. ग्रामीण समाज के लोगों का धार्मिक जीवन वृहद एवं लघु परम्पराओं की अन्तःक्रिया सम्बन्धित तथ्यों का अन्वेषण करना तथा ग्रामीण लोगों में सांस्कृतिक मूल्यों के परिवर्तित होने की प्रकृति क्या है।

LorU= ifjoR;l ¼lkekftd ifjoR;½

विश्लेषण करने के बाद समाज विज्ञाान में सम्बन्धात्मक एवं सहसम्बन्ध का प्रभाव देखना निश्चित होता है। प्रस्तुत अध्ययन में आयु, शिक्षा, जाति, परिवार के स्वरूप को स्वतन्त्र परिवर्त्य माना गया है जो मुख्य रूप से नीचे विश्लेषित हैं।

vk;|

आयु व्यक्ति की मानसिक स्थिति की द्योतक है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से इसका पीढ़ी पर सीधा प्रभाव पड़ता है। यह व्यक्ति की सामाजिक स्थिति का निर्धारण करता है। (धर्मराज सिंह – 1985) अध्ययन में आयु को तीन भागों में, प्रथमः 20–35 (युवा आयु समूह) द्वितीयः 36–50 (मध्यम आयु समूह) तृतीयः 51 से ऊपर (वृद्ध आयु समूह) बांटा गया है।

f'k{kk

शिक्षा व्यक्ति के अन्तः क्रियात्मक सम्बन्धों में एक प्रमुख भूमिका अदा करती है। यह व्यक्ति को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। साथ ही साथ शिक्षा का भारतीय समाज मे एक प्रमुख स्थान है। (धर्मराज सिंह – 1985) अध्ययन के लिए अशिक्षित, प्राइमरी, जूनियर, हाईस्कूल, इन्टरमीडिएट, स्नातक, स्नातकोत्तर चार भागों में बांटा गया है।

Tkkfr

जाति भारतीय समाज व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह व्यक्ति के पद स्थिति का निर्धारण करती है तथा साथ ही साथ भूमिकाओं को निर्देशित करती है। (धर्मराज सिह – 1985) अध्ययन में जाति को तीन भागों में, प्रथमः उच्चजाति, द्वितीयः पिछडी जाति, तृतीयः अनुसूचित व अनुसूचित जनजाति में बांटा गया है।

ifjokj dk Lo:i

परिवार को दो भागों में बांटा गया है। संयुक्त परिवार एवं एकाकी परिवार दो या दो से अधिक लोगों का परिवार जो एक साथ रहता है, उन्हे संयुक्त परिवार माना जाता है।

vo/kkj.kkvksa dh 0;k[;k
xzkeh.k lkekftd lajpuk

संरचना शब्द का प्रयोग सामान्यतः किसी रचना की इकाईयों, अंगो के ऐसे प्रतिमानित सम्बन्धों के लिए किया जाता है जो अपेक्षाकृत स्थिर एवं स्थायी होते हैं। ग्रामीण सामाजिक संरचना के अन्तर्गत ग्रामीण समाज के विभिन्न भागों अथवा निर्णायक तत्वों के ऐसे सम्बन्धों से

है जो एक व्यवस्था एवं संगठन का निर्माण करता है। संरचना अंशों की व्यवस्थित क्रमबद्धता को प्रकट करती है जिसे अपरिवर्तनीय माना जाता है।

xkeh.k

एक ग्रामीण क्षेत्र वह है जहाँ लोग किसी प्राथमिक उद्योग में लगे हों, अर्थात् प्रकृति के सहयोग से वे वस्तुओं का प्रथमवार उत्पादन करते हैं।

"K.N. Shrivasrtava "what is rural" Rural India, March & April : 1961 p 87.

A Rural Area is one where the people are engaged in a primary industry that is to say they Produse commodities for the first time in co-operation with nature

ग्रामीण शब्द का प्रकृति से घनिष्ठ सम्बन्ध है मानव अपने जीवनयापन के लिए ग्रामीण क्षेत्र में प्रकृति पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर होता है। वह प्रकृति से वस्तुओं का प्रयोग सीधे रूप में करता है, उनके रूपान्तरण के बाद नही। उदाहरण–गेहूं, कपास, तिलहन, जूट का उत्पादन ग्रामीण अवस्था है नगरों में इन्हे विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजार कर अनेक प्रकार की वस्तुएं निर्मित की जाती हैं।

l e|nk;

समुदाय शब्द का प्रयोग हम किसी बस्ती, एक गॉव, एक शहर अथवा एक राष्ट्र आदि के लिए करते हैं। समुदाय मनुष्यों का एक ऐसा समूह है जो एक भौगोलिक क्षेत्र में निवास करता है। जिसमे 'हम की भावना' होती है तथा जिसका एक सामान्य जीवन होता है मानव की अधिकांश आवश्यकताएं समुदायों में ही पूरी होती है। एक समुदाय में निवास करने वाले लोगों में एकता और सामूहिकता की भावना होती है, वे घनिष्ठता के सूत्र मे बंधे होते हैं।

xkeh.k l e|nk;

प्रत्यक्ष सम्बन्धों पर आधारित एक ऐसे समूह को ग्रामीण समुदाय कहा जाता है जिसके अधिसंख्य व्यक्ति अधिकांशतः उन सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, धार्मिक तथा अन्य सेवाओं का प्रयोग करते हैं, जो उनके सामूहिक जीवन के लिए आवश्यक है, इस समूह के सदस्यों का जीवन के आधारभूत मुद्दो, मनोभावों तथा क्रियाओं के सम्बन्ध में एक प्रकार का समझौता होता है, जो सामान्यतः किसी गाँव अथवा कस्बे पर केन्द्रीभूत होता है। ऐसा समूह मूलतः अनेक कृषि योग्य भूमि पर खेती करता है मैदानी भूमि को आपस में बाँट लेता है, आस–पास की बेकार एंव बंजर भूमि पर पशुओ को चराता है तथा निकटवर्ती समुदायों की सीमाओं तक वह अपने अधिकार का दावा करता है।

vk/kfudhdj.k

आधुनिकीकरण एक अनिवार्य प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अथवा समाज परम्परागत अथवा अर्द्धपरम्परागत स्थिति से निकलकर इच्छुक तकनीकी को पाना चाहता है। जो सामाजिक

संरचना, मूल्य, प्रेरणा, संवेग और प्रतिमान से सम्बन्धित है। आधुनिकीकरण की अवधारणा मूलतः अंग्रेजी के आधुनिक शब्द से ही बनी है आधुनिक का आशय है गत्यात्मकता (डायनामिज्य) और गत्यात्मकता का आशय है, परम्परावादी विचारों मान्यताओं आदर्शों आदि को छोड़कर नवीन विचारों मूल्यों को आत्मसात् करना।

ifof/k;k rFkk midj.k
v/;;u dk lex ,o fun'ku

समाज वैज्ञानिक अध्ययन की एक प्रमुख समस्या अध्ययन के समग्र का चयन है। साधारण तथा अध्ययन के समग्र का चयन करते समय अध्ययन के लक्ष्य और अध्ययन कार्य की व्यवहारिकता को वरीयता प्रदान की जाती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण समुदाय पर आधुनिकीकरण का प्रभाव हरदोई जनपद के अहिरोरी विकासखण्ड के अन्तर्गत चार ग्राम सभाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन में उत्पन्न होने वाले परिवर्तन का अन्वेषण करना है। गदनपुर, कसमण्डी ग्राम सभा को वर्तमान अध्ययन में विकसित ग्राम सभा के रूप में तथा महीनकुण्ड व करीम नगर को अविकसित ग्राम सभा के रूप में चुना गया है। समग्र का चुनाव *no fun'ku* पद्धति (नियमित अंकन विधि) द्वारा किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन हरदोई जनपद के अहिरोरी विकासखण्ड पर आधारित है। अध्ययन के मुख्य ग्राम सभा (विकसित) गदनपुर (78) कसमण्डी (70) तथा (अविकसित) महीनकुण्ड (34) करीमनगर (48) उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। भूमि स्वामित्व के आधार पर भूमिहीन (50) सीमान्त कृषक (103) लघुकृषक (38) बड़े कृषक (39) उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। जिसका वर्णन सारिणी 2.1 एवं 2.2 में किया गया है।

rF; ldyu

वर्तमान अध्ययन के तथ्यों का संकलन दो स्तरों पर किया गया है, प्राथमिक और द्वितीयक। प्राथमिक तथ्यों का संकलन अनुसंधानकर्ता ने साक्षात्कार अनुसूची, अवलोकन के माध्यम से किया है। मुख्य रूप से एक साक्षात्कार अनुसूची जिसे परिशिष्ट 'ब' में प्रदर्शित किया है। इस साक्षात्कार अनुसूची में उत्तरदाता के परिवार के आर्थिक, व्यवसायिक जीवन, धार्मिक विश्वास आदि से सम्बन्धित अधिकतर प्रतिबन्ध और कुछ अप्रतिबन्ध प्रश्न सम्मिलित किये गये हैं। अनुसूची को तैयार करने के पश्चात् गाँव में जाकर उसका पूर्ण परीक्षण किया। इस पूर्ण परीक्षण के द्वारा अनुसूची की त्रुटियों का निराकरण तथा उसकी बोधगम्यता की वृद्धि में सहयोग मिला अनुसूची को अन्तिम रूप प्रदान करने के पश्चात् तथ्य संकलन का कार्य प्रारम्भ किया। द्वितीयक तथ्यों के अन्तर्गत न्याय पंचायत के भौगोलिक, ऐतिहासिक, जनसंख्यात्मक और सामुदायिक जीवन से सम्बन्धित आंकड़े सम्मिलित हैं, इन आंकड़ों का संकलन तहसील विकास कार्यालय जिला परिषद, नियोजन, सिचाई, भूमि विकास और चकबन्दी कार्यालयों से प्राप्त किया गया है। यह कार्य जुलाई 2012 से जून 2013 के मध्य

चलता रहा। इस अवधि में अनुसंधानकर्ता ने गाँव में जाकर उत्तरदाताओं का साक्षात्कार उनके निवास स्थान पर किया। साक्षात्कार पूर्ति करने के साथ–साथ अनुसंधानकर्ता ने अपने अवलोकनों के आधार पर विस्तृत फील्ड नोट तैयार किया।

rF;k dk oxhZdj.k ,oa lkj.kh;u

अध्ययन द्वारा संकलित तथ्यों के वर्गीकरण और सारणीयन का कार्य व्यक्तिगत रूप से अनुसंधानकर्ता द्वारा तथ्यों को उनकी समानता और विभिन्नता के आधार पर भिन्न भिन्न वर्गों अनुक्रमो और श्रेणियों में विभाजित करके सारणीयन तैयार की गयी हैं। प्रत्येक सारणी में तथ्यों की आवृत्ति और साधारण प्रतिशत प्रदर्शित किया गया है। प्रतिशत दशमलव में एक अंक तक शुद्ध करके निकाला गया है। आयु, शिक्षा, जाति परिवार के स्वरूप आदि का स्वतन्त्र परिवर्त्य मानकर तथ्यों का सहसम्बन्ध ज्ञात किया गया है।

v/;k;hdj.k

शोध प्रबन्ध निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम–प्रस्तावना

द्वितीय–अध्ययन पद्धति

क–परिकल्पना

ख–शोध प्रारूप

ग–प्रविधियाँ तथा उपकरण

तृतीय–सामुदायिक पृष्ठभूमि

चतुर्थ–उत्तरदाताओं की सामाजिक एवं पारिवारिक संरचना

पंचम–ग्रामीण आर्थिक संरचना

षष्टम– कृषि एवं भूमि स्वामित्व

सप्तम–राजनैतिक सहभागिता एवं सूचना सम्प्रेषण

अष्टम–सांस्कृतिक मूल्य एवं धार्मिक क्रियायें

सार संग्रह

परिशिष्ट क संदर्भ संग्रह

ख साक्षात्कार अनुसूची/प्रश्नावली

mRrjnkrkvk dh Hkfe ,oa tkfr

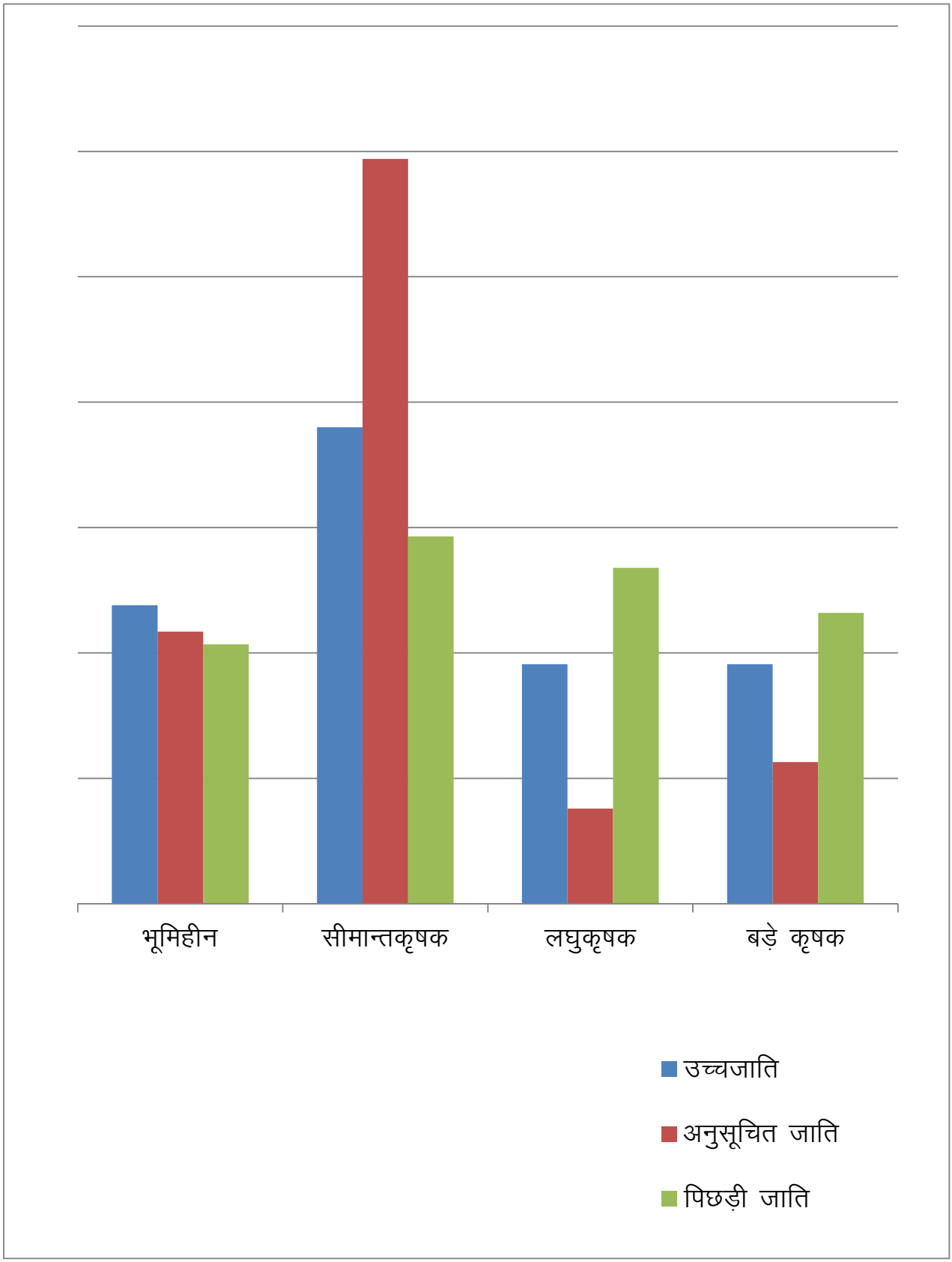

lkfj.kh 2-1 % tkfr ,o Hkfe LokfeRo d vk/kkj ij fun'ku dk p;u

tkfr	Hkfeghu		lhekUr d"kd		y?k d"kd		cM d"kd		;kx	
	समग्र	निदर्शन	समग्र	निदर्शन	समग्र	निदर्शन	समग्र	निदर्शन	समग्र	निदर्शन
उच्चजाति	102 24.3	10 23.8	165 39.3	16 38.0	68 16.2	8 19.1	85 20.2	8 19.1	420 100.0	42 100.0
पिछड़ीजाति	170 20.6	17 20.7	245 29.7	24 29.3	222 26.9	22 26.8	188 22.8	19 23.2	825 100.0	82 100.0
अनुसूचितजाति	238 22.4	23 21.7	631 59.4	63 59.4	77 7.2	8 7.6	117 11.0	12 11.3	1063 100.0	106 100.0
योग	510 100.0	50 21.7	1041 100.0	103 44.8	367 100.0	38 16.5	386 100.0	39 17.0	2304 100.0	230 100.0

lkfj.kh 2-2 & gjnkbl tuin d vfgjkjh fodkl [k.M e v/;;u e pqu x; xke lHkkvk d mRrjnkrk

Ø0 l0	xke lHkk dk uke	Hkfeghu		lhekUr d"kd		y?k d"kd		cM d"kd		;kx	
		lex	fun'ku	lex	fun'ku	lex	fun'ku	lex	fun'ku	lex	fun'ku
01	गदनपुर	263 33.7	26 33.4	268 34.4	27 34.6	135 17.3	14 17.9	114 14.6	11 14.1	780 100.0	78 100.0
02	कसमण्डी	124 17.7	12 17.1	337 48.2	34 48.7	119 17.0	12 17.1	120 17.1	12 17.1	700 100.0	70 100.0
03	महीनकुण्ड	29 8.5	3 8.8	166 48.8	16 47.1	69 20.3	7 20.6	76 22.4	8 23.5	340 100.0	34 100.0
04	करीमनगर	94 19.4	9 18.8	270 55.8	27 56.3	44 9.1	4 8.3	76 15.7	8 16.6	484 100.0	48 100.0
योग		510 100.0	50 21.7	1041 100.0	103 44.8	367 100.0	38 16.5	386 100.0	39 17.0	2304 100.0	230 100.0

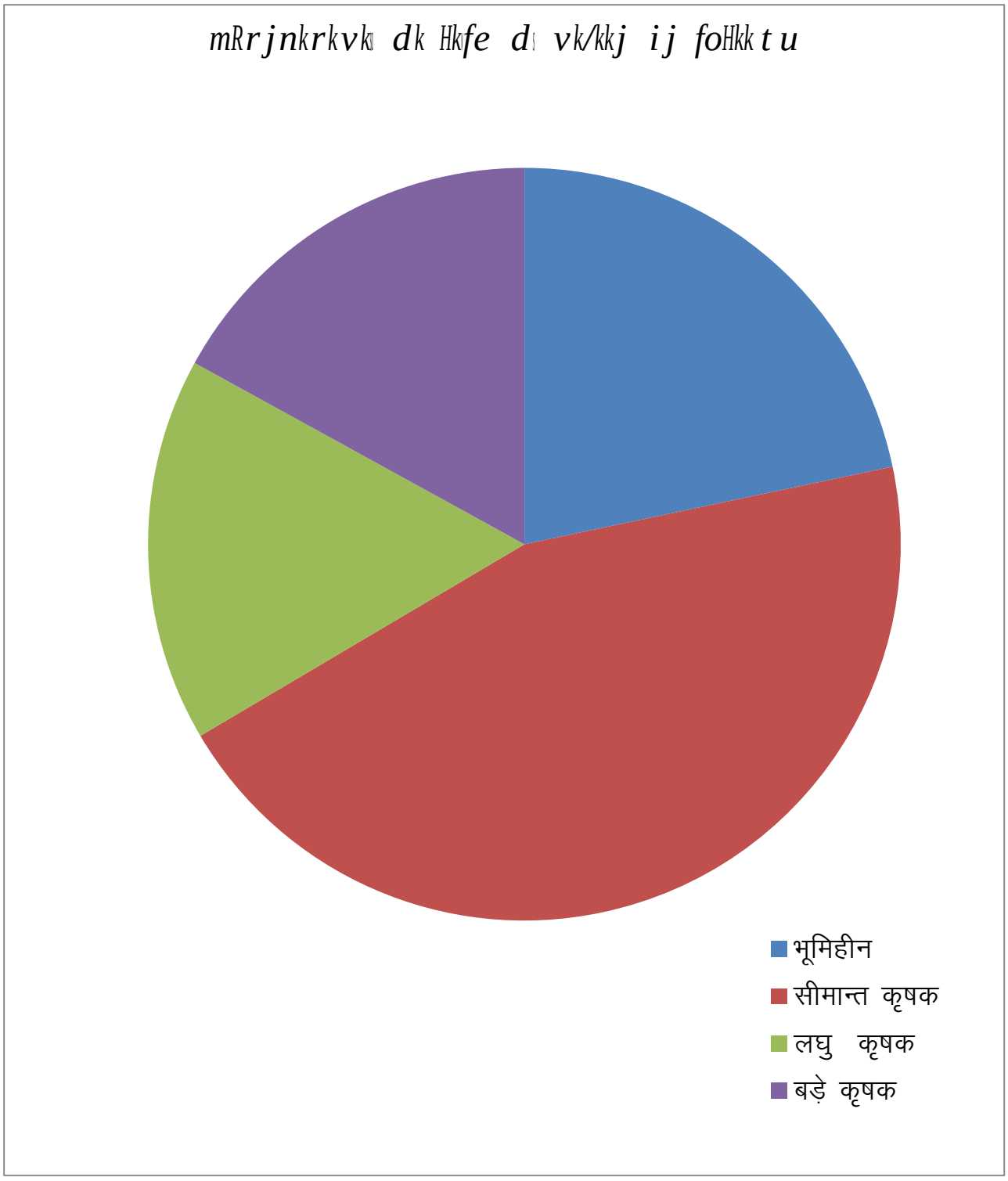
mRrjnkrkvk dk Hkfe d vk/kkj ij foHkkt u
भूमिहीन
सीमान्त कृषक
लघु कृषक
बड़े कृषक

fp= & 1-1

v/;;u dky e vk;h dfBukb;k

प्रस्तुत अध्ययन ग्रामीण समुदाय से सम्बन्धित है इसीलिए अध्ययन काल में शोधकर्ता को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा। उन समस्याओं में से कुछ प्रमुख समस्याएं निम्नलिखित हैं –

2. साक्षात्कार देने के लिए पहले तो ग्रामीण लोग विशेषकर अनुसूचितजाति के लोग तैयार ही नही हो रहे थे। क्योकि वे सोच रहे थे कि हम जैसे निर्धनों की सहायता कोई क्या करेगा। इस समस्या का समाधान गॉव के प्रधान व उच्च प्रतिष्ठा वाले लोगों से मिलकर हल करना पड़ा।

3. चूंकि उच्च शिक्षा प्राप्त लोगो की संख्या बहुत ही कम थी इसीलिए वे प्रश्नों को भली–भाँति समझ नही पाते थे। इसलिए उन्हें समझाने हेतु स्थानीय भाषा का प्रयोग करना पड़ा।

4. उत्तरदाता परिवार के सदस्यों की संख्या की गणना करने में घबराहट महसूस करते थे। कुछ तो अनुसूचितजाति के ऐसे भी उत्तरदाता मिले जो मारे डर के घर के बाहर ही नही निकलते थे।

अध्ययन क्षेत्र में आयी हुई तमाम कठिनाईयों के समाधान में उसी जाति के लोग अथवा गाँव के प्रतिष्ठा वाले लोगों का मुझे काफी सहयोग मिला अन्यथा यह कठिन कार्य इस रूप में पूर्णतः के साथ प्रस्तुत न हो पाता।